Taittirīya-Brāhmaṇa

Book 3, Chapter 4

Edited by Subramania Sarma, Chennai

Final proofread version, 1st April 2005

[[3-4-1-1]]

ब्रह्म॑णे ब्रा॒ह्म॒णमाल॑भते।

क्ष॒त्त्राय॑ राज॒न्य᳚म्।

म॒रुद्भ्यो॒ वैश्य᳚म्।

तप॑से शू॒द्रम्।

तम॑से॒ तस्क॑रम्।

नार॑काय वीर॒हण᳚म्।

पा॒प्मने᳚ क्ली॒बम्।

आ॒क्र॒याया॑यो॒गूम्।

कामा॑य पुँ॒श्च॒लूम्।

अति॑क्रुष्टाय माग॒धम्॥ १॥ ॥ १॥

[[3-4-2-1]]

गी॒ताय॑ सू॒तम्।

नृ॒त्ताय॑ शै॒लूषम्।

धर्मा॑य सभाच॒रम्।

न॒र्माय॑ रे॒भम्।

नरि॑ष्ठायै भीम॒लम्।

ह॒सा॑य॒ कारि᳚म्।

आ॒न॒न्दाय॑ स्त्री॒षखम्।

प्र॒मुदे॑ कुमारीपु॒त्रम्।

मे॒धायै॑ रथका॒रम्।

धैर्या॑य॒ तक्षा॑णम्॥ १॥ ॥ २॥

[[3-4-3-1]]

श्रमा॑य कौला॒लम्।

मा॒यायै॑ कार्मा॒रम्।

रू॒पाय॑ मणिका॒रम्।

शु॒भे॑ व॒पम्।

श॒र॒व्या॑या इषुका॒रम्।

हे॒त्यै॑ धन्वका॒रम्।

कर्म॑णे ज्याका॒रम्।

दि॒ष्टाय॑ रज्जुस॒र्गम्।

मृ॒त्यवे॑ मृग॒युम्।

अन्त॑काय श्व॒नित॑म्॥ १॥ ॥ ३॥

[[3-4-4-1]]

स॒न्धये॑ जा॒रम्।

गे॒हायो॑पप॒तिम्।

निर्ऋ॑त्यै परिवि॒त्तम्।

आर्त्यै॑ परिविविदा॒नम्।

अरा॑ध्यै दिधिषूप॒ति॑म्।

प॒वित्रा॑य भि॒षज॑म्।

प्र॒ज्ञाना॑य नक्षत्रद॒र्शम्।

निष्कृ॑त्यै पेशस्का॒रीम्।

बला॑योप॒दाम्।

वर्णा॑यानू॒रुध॑म्॥ १॥ ॥ ४॥

[[3-4-5-1]]

न॒दीभ्यः॑ पौञ्जि॒ष्टम्।

ऋ॒क्षीका॑भ्यो॒ नैषा॑दम्।

पु॒रु॒ष॒व्या॒घ्राय॑ दु॒र्मद॑म्।

प्र॒यु॒द्भ्य उन्म॑त्तम्।

ग॒न्ध॒र्वा॒प्स॒राभ्यो॒ व्रात्य॑म्।

स॒र्प॒दे॒व॒ज॒नेभ्योऽप्र॑तिपदम्।

अवे॑भ्यः कि॒तवम्।

इ॒र्यता॑या॒ अकि॑तवम्।

पिशाचेभ्यो बिदलकारम्।

यातुधानेभ्यः कण्टककारम्॥ ५॥ ॥ ५॥

[[3-4-6-1]]

उथ्सादेभ्यः कुब्जम्।

प्रमुदे वामनम्।

द्वाभ्यः स्त्रामम्।

स्वप्नायान्धम्।

अधर्माय बधिरम्।

संज्ञानाय स्मरकारीम्।

प्रकामोद्यायोपसदम्।

आशिक्षायै प्रश्निनम्।

उपशिक्षाया अभिप्रश्निनम्।

मर्यादायै प्रश्नविवाकम्॥ ६॥ ॥ ६॥

[[3-4-7-1]]

ऋत्यै स्तेनहृदयम्।

वैरहत्याय पिशुनम्।

विविक्त्यै क्षत्तारम्।

औपद्रष्टाय संग्रहीतारम्।

बलायानुचरम्।

भूम्ने परिष्कन्दम्।

प्रियाय प्रियवादिनम्।

अरिष्ट्या अश्वसादम्।

मेधाय वासःपल्पूलीम्।

प्रकामाय रजयित्रीम्॥ १॥ ॥ ७॥

[[3-4-8-1]]

भायै दार्वाहारम्।

प्रभाया आग्नेन्धम्।

नाकस्य पृष्ठायाभिषेक्तारम्।

ब्रध्नस्य विष्टपाय पात्रनिर्णेगम्।

दे॒व॒लो॒काय॑ पेशि॒तार᳚म्।

म॒नु॒ष्य॒लो॒काय॑ प्रकरि॒तार᳚म्।

सर्वे᳚भ्यो लो॒केभ्य॑ उपसे॒क्तार᳚म्।

अव॑र्त्यै व॒धायो॑पमन्थि॒तार᳚म्।

सु॒व॒र्गाय॑ लो॒काय॑ भाग॒दु॒घ᳚म्।

वर्षि॑ष्ठाय॒ नाका॑य परिवे॒ष्टार᳚म्॥ १॥ ॥ ८॥

[[3-4-9-1]]

अर्मे᳚भ्यो ह॒स्ति॒पम्।

ज॒वाया᳚श्व॒पम्।

पुष्ट्यै॑ गोपा॒लम्।

तेज॑सेऽजपा॒लम्।

वी॒र्या᳚यावि॒पा॒लम्।

इरा॑यै की॒नाश᳚म्।

की॒ला॒ला॑य सुराका॒रम्।

भ॒द्राय॑ गृह॒पम्।

श्रेय॑से वि॒त्त॒धम्।

अध्य॑क्षायानुक्ष॒त्तार᳚म्॥ १॥ ॥ ९॥

[[3-4-10-1]]

म॒न्यवे॑ऽयस्ता॒पम्।

क्रोधा॑य निस॒रम्।

शोका॑याभिस॒रम्।

उ॒त्कू॒ल॒वि॒कू॒लाभ्यां᳚ त्रिस्थि॒न᳚म्।

योगा॑य यो॒क्तार᳚म्।

क्षेमा॑य वि॒मो॒क्तार᳚म्।

वपु॑षे मानस्कृ॒तम्।

शीला॑याञ्जनीका॒रम्।

निर्ऋ॑त्यै कोशका॒रीम्।

य॒माया॒सूम्॥ १॥ ॥ १०॥

[[3-4-11-1]]

य॒म्यै᳚ यम॒सूम्।

अथ॒र्व॑भ्योऽव॑तोकाम्।

सं॒व॒थ्स॒राय॑ पर्या॒रिणी᳚म्।

प॒रि॒व॒थ्स॒राया॒वि॑जाताम्।

इ॒दा॒व॒थ्स॒राया॑प॒स्कद्व॑रीम्।

इ॒द्व॒त्स॒राया॒तीत्व॑रीम्।

व॒थ्स॒राय॒ वि॑जर्ज॑राम्।

सं॒व॒थ्स॒राय॒ पलि॑क्नीम्।

वना॑य व॒नपम्।

अ॒न्यतो॑ऽरण्याय दा॒वपम्॥ १॥ ॥ ११॥

[[3-4-12-1]]

सरो᳚भ्यो धै॒वरम्।

वेश॑न्ताभ्यो॒ दाश᳚म्।

उ॒प॒स्थाव॑रीभ्यो॒ बैन्द᳚म्।

न॒ड्व॒लाभ्य॑ः शौष्क॒लम्।

पा॒र्या᳚य कैव॒र्तम्।

अ॒वा॒र्या᳚य मार्गा॒रम्।

ती॒र्थेभ्य॑ आ॒न्दम्।

विष॑मेभ्यो मैना॒लम्।

स्वने᳚भ्यः॒ पर्ण॑कम्।

गुहा᳚भ्यः॒ किरा॑तम्।

सानु॑भ्यो॒ जम्भ॑कम्।

पर्व॑तेभ्यः॒ किंपू॑रुषम्॥ १॥ ॥ १२॥

[[3-4-13-1]]

प्र॒ति॒श्रुत्का॑या ऋतु॒लम्।

घोषा॑य भ॒षम्।

अन्ता॑य बहुवा॒दिन᳚म्।

अ॒न॒न्ताय॒ मूक᳚म्।

मह॑से वीणावा॒दम्।

क्रोशा॑य तूणव॒ध्मम्।
आ॒क्र॒न्दाय॑ दुन्दुभ्याघा॒तम्।
अ॒व॒र॒स्प॒राय॑ शङ्ख॒ध्मम्।
ऋ॒भुभ्यो॑ऽजिनसन्धा॒यम्।
सा॒ध्येभ्य॑श्चर्म॒म्णम्॥ १॥ ॥ १३॥

[[3-4-14-1]]
बी॒भ॒त्साये॑ पौल्क॒सम्।
भूत्यै॑ जागर॒णम्।
अभू॑त्यै स्वप॒नम्।
तु॒लायै॑ वाणि॒जम्।
वर्णा॑य हिरण्यका॒रम्।
विश्वे॑भ्यो दे॒वेभ्यः॑ सिध्म॒लम्।
प॒श्चा॒द्दो॒षाय॑ ग्ला॒वम्।
ऋत्यै॑ जनवा॒दिन॑म्।
व्यृ॑द्ध्या अपग॒ल्भम्।
स॒ꣳ॒श॒राय॑ प्र॒च्छिद॑म्॥ १॥ ॥ १४॥

[[3-4-15-1]]
हसा॑य पु॒ꣳ॒श्चलू॒माल॑भते।
वी॒णा॒वा॒दं गण॑कं गी॒ताय॑।
याद॑से शाबु॒ल्याम्।
न॒र्माय॑ भद्र॒वतीम्।
तू॒ष्ण॒व॒ध्मं ग्रा॑म॒ण्यं॑ पाणिसं॒घा॒तं नृ॒त्ताय॑।
मोदा॑यानु॒क्रोश॑कम्।
आ॒न॒न्दाय॑ तल॒वम्॥ १॥ ॥ १५॥

[[3-4-16-1]]
अ॒क्ष॒रा॒जाय॑ कित॒वम्।
कृ॒ताय॑ सभा॒विन॑म्।
त्रेता॑या आदिनवद॒र्शम्।
द्वा॒परा॑य बहिः॒सद॑म्।

कलये सभास्थाणुम्।
दुष्कृताय चरकाचार्यम्।
अध्वने ब्रह्मचारिणम्।
पिशाचेभ्यः सैलगम्।
पिपासायै गोव्यच्छम्।
निर्ऋत्यै गोघातम्।
क्षुधे गोविकर्तम्।
क्षुत्तृष्णाभ्यां तम्।
यो गां विकृन्तन्तं माꣳसं भिक्षमाण उपतिष्ठते॥ १॥ ॥ १६॥

[[3-4-17-1]]
भूम्यै पीठसर्पिणमालभते।
अग्नयेऽꣳसलम्।
वायवे चाण्डालम्।
अन्तरिक्षाय वꣳशनर्तिनम्।
दिवे खलतिम्।
सूर्याय हर्यक्षम्।
चन्द्रमसे मिर्मिरम्।
नक्षत्रेभ्यः किलासम्।
अह्ने शुक्लं पिङ्गलम्।
रात्रियै कृष्णं पिङ्गाक्षम्॥ १॥ ॥ १७॥

[[3-4-18-1]]
वाचे पुरुषमालभते।
प्राणमपानं व्यानमुदानꣳ समानं तान्वायवे।
सूर्याय चक्षुरालभते।
मनश्चन्द्रमसे।
दिग्भ्यः श्रोत्रम्।
प्रजापतये पुरुषम्॥ १॥ ॥ १८॥

[[3-4-19-1]]
अथैतानरूपेभ्य आलभते।

अति॑ह्रस्व॒मति॑दीर्घम्।

अति॑कृश॒मत्यꣳ॑सलम्।

अति॑शुक्ल॒मति॑कृष्णम्।

अति॑श्लक्ष्ण॒मति॑लोमशम्।

अति॑किरिट॒मति॑दन्तुरम्।

अति॑मिर्मिर॒मति॑मेमिषम्।

आ॒शायै॑ जा॒मिम्।

प्र॒ती॒क्षायै॑ कुमा॒रीम्॥ १॥ ॥ १९॥